स्वप्न

स्वप्न जो मैंने सँजोए शीघ्र ही सब सफल होंगे।
खँड़हरों की नींव पर ही गगनचुम्बी महल होंगे॥

है मुझे विश्वास मेंरी कल्पना साकार होगी।
नाव जो मँजधार में है, कल वही उस पार होगी।
देख नौका को वहाँ तूफान सारे विकल होंगे।
स्वप्न जो मैंने सँजोए शीघ्र ही सब सफल होंगे॥

मैं जलाता दीप आशा के, निराश की निशा में।
लड़खड़ाते ही सही पर चल रहा निश्चित दिशा में।
कण्टकों की है नहीं परवाह, वे अब विरल होंगे।
स्वप्न जो मैंने सँजोए शीघ्र ही सब सफल होंगे॥

चन्द बादल चांद को आवृत्त करना चाहते हैं।
हो नहीं सकता कभी यह, वे नहीं यह जानते हैं।
चांद निकलेगा अभी औ' मेघ सारे विफल होंगे।
स्वप्न जो मैंने सँजोए शीघ्र ही सब सफल होंगे॥

आगमन ऋतुराज का हो, मैं प्रतीक्षा कर रहा हूँ।
जूझकर इन पतझड़ों से मैं परीक्षा दे रहा हूँ ।
देखना उद्यान में तुम, बकुल होंगे, कमल होंगे।
स्वप्न जो मैंने सँजोए शीघ्र ही सब सफल होंगे॥

ये न तुम समझो हवा में मैं हवेली बाँधता हूँ।
कवि-हृदय हूँ, कल्पना में ही हिमालय लाँघता हूँ।
दाद देना तुम तभी जब बाहु मेरे सबल होंगे।
स्वप्न जो मैंने सँजोए शीघ्र ही सब सफल होंगे॥

कार्य अपना पूर्ण करके जब चलूँगा मैं यहाँ से।
तब तुम्हीं मुझसे कहोगे ''ज्ञान, मत जा इस जहाँ से।''
मैं नहीं तब रुक सकूँगा, दृग तुम्हारे सजल होंगे।
स्वप्न जो मैंने सँजोए, शीघ्र ही सब सफल होंगे॥

माणिकनगर, ८ नवम्बर १९८५